बुद्धवर्ष 2552, ज्येष्ठ पूर्णिमा, 18 जून, 2008 वर्ष 37 अंक 12

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

For Patrika in various languages, visit: www.vri.dhamma.org/newsletters

**धम्मवाणी**

**यो च वस्ससतं जीवे, अपस्सं धम्ममुत्तमं।**
**एकाहं जीवितं सेय्यो, पस्सतो धम्ममुत्तमं॥**
– धम्मपद ११५, सहस्सवग्गो

उत्तम धर्म (नवविध लोकोत्तर धर्म अर्थात चार मार्ग, चार फल और निर्वाण) को न देखने वाले व्यक्ति के सौ वर्ष के जीवन से उत्तम धर्म को देखने वाले (व्यक्ति) का एक दिन का जीवन श्रेयस्कर होता है।

**'बुद्धचारिका'**

## जाओ धर्मदूतो! धर्मप्रचारण के लिए विचरण करो!

जो सद्धर्म है, यानी जो सत्य पर आधारित धर्म है, वह **स्वाक्खातो,** यानी भलीभांति आख्यात किया गया है, समझाया गया है। उसमें कोई उलझन, भटकन, भुलावन नहीं है। स्पष्ट है इसीलिए सद्धर्म है। सद्धर्म **सन्दिट्ठिको,** यानी प्रत्यक्ष सच्चाई पर आधारित है, उसके पालन का फल भी **अकालिको है,** यानी अभी यहीं मिलने लगता है। जो उसका रंचमात्र भी रस चख लेता है, उससे रहा नहीं जाता। औरों से कहने लगता है – **एहिपस्सिको,** यानी आ, तू भी चख कर देख। देख, यह किस प्रकार **ओपनेय्यिको,** यानी कदम-कदम दुःखमुक्ति की ओर ले जाता है। **पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञूहि,** यानी प्रत्येक समझदार व्यक्ति के लिए यह स्वयं अनुभव करने योग्य है।

एक सामान्य साधक भी स्वयं चख कर औरों को **एहिपस्सिको,** 'आओ, देखो!' की गुहार लगाने लगता है। यहां तो ६० विपश्यी अरहंत हैं। जो सीखा है, उसे अपने तक सीमित कैसे रख सकते थे? मानस में लोकहित की प्रबल भावना जागने लगी। भगवान भी यही चाहते थे। ऋषिपत्तन मृगदाव में पहला वर्षावास पूरा करके आश्विन की शरद पूर्णिमा के दिन भगवान ने इन ६० धर्मदूत अरहंतों को प्रोत्साहित किया कि वे सद्धर्म प्रचारण के लिए विचरण करें। **चरथ, भिक्खवे, चारिकं, बहुजनहिताय बहुजनसुखाय।**

दुखियारों की संख्या बहुत बड़ी है। धर्मप्रचारण का क्षेत्र बहुत बड़ा है। अतः इस प्रकार चारिका करो, जिससे कि अधिक-से-अधिक लोगों से धर्म-संपर्क हो सके। अधिक-से-अधिक लोगों का हित सध सके, उन्हें सुख प्राप्त हो सके। लोगों पर अनुकंपा करते हुए चारिका करो, धर्म बांटो, जिससे देवों और मनुष्यों का, यानी राजाओं और प्रजाओं का, हित-सुख सधे।

ध्यान रहे कि अधिक-से-अधिक लोग लाभान्वित हों, इस निमित्त अलग-अलग अकेले चारिका करो। किसी पथ पर एक-साथ दो धर्मदूत न जायें। **मा एकेन द्वे अगमित्थ।** प्रत्येक धर्मदूत अलग पथ पर एक अकेला जाय, जिससे कि अधिक जनों से संपर्क हो और उन्हें धर्म मिल सके।

बहुजनों को धर्म समझाओ। केवल शब्दों में ही नहीं, बल्कि स्पष्टतया अर्थों में समझाओ। **सात्थं सब्यञ्जनं।** केवल उपदेशों द्वारा सैद्धांतिक रूप में ही नहीं, बल्कि इस ब्रह्माचरण को, यानी धर्माचरण को, अपने जीवन में उतार कर उसके क्रियात्मक रूप को प्रकाशित करो। **ब्रह्मचरियं पकासेथ।**

सार्वजनीन धर्म का उपदेश करो जो सब का है, किसी संप्रदायविशेष का नहीं। तभी इसे धर्म कहा, बौद्धधर्म नहीं। सार्वजनीन धर्म भी ऐसा जो आदि में कल्याणकारी, मध्य में कल्याणकारी और अंत में कल्याणकारी है। यानी शील में कल्याणकारी, समाधि में कल्याणकारी और प्रज्ञा में कल्याणकारी है।

जो भी व्यक्ति शील में परिपक्व हो, उसकी समाधि महाफलदायिनी होती है। जो समाधि में परिपक्व हो, उसकी प्रज्ञा महाफलदायिनी होती है। जो प्रज्ञा में स्थित होकर स्थितप्रज्ञ हो जाता है, वह सर्वथा दुःखमुक्त हो जाता है। भवमुक्त हो जाता है। मुक्ति का यह फल किसी संप्रदायविशेष के लोगों तक सीमित नहीं है, बल्कि सब के लिए है।

शील, समाधि, प्रज्ञा का यह आर्य अष्टांगिक मार्गीय विपश्यना धर्म सर्वथा परिपूर्ण है। इसमें कुछ जोड़ने की आवश्यकता नहीं। जोड़ने से दूषित हो जायगा, मलीन हो जायगा। यह धर्म सर्वथा परिशुद्ध है। अशुद्ध मान कर इसमें से कुछ निकालने पर यह क्षीण हो जायगा, दुर्बल हो जायगा।

इसे समझाते हुए भगवान ने कहा– भिक्षुओ! **लोकानुकम्पाय,** यानी लोगों पर अनुकंपा करते हुए, बहुजन के हित के लिए, बहुजन के सुख के लिए विचरण करो।

---

**वरो वरञ्ञू वरदो वराहरो, अनुत्तरो धम्मवरं अदेसयि।**

*– (खुद्दकपाठ- ६,, रतनसुत्त- १४)*

– श्रेष्ठ को जानने वाले, देने वाले, लाने वाले श्रेष्ठ बुद्ध ने अनुत्तर धर्म की देशना दी।

## दुष्प्रचार

भगवान बुद्ध की शिक्षा के विरुद्ध सदियों से भारत में जो दुष्प्रचार होता रहा, उसका शिकार भगवान का उपरोक्त उद्‌बोधन भी हुआ। भारत आने के बाद चौथे वर्ष यहां के एक प्रसिद्ध संत से मेरी भेंट हुई। बातचीत के दौरान उन्होंने यह स्वीकार नहीं किया कि शरीर की संवेदनाओं को तटस्थभाव से देखने पर मन के विकार दूर होते हैं। इसे सिद्ध करने के लिए मुझे चुनौती दी गयी। मैंने विनम्रतापूर्वक उसे स्वीकार किया।

भगवान के जीवन की उपरोक्त घटना पर भी उन्होंने कटु विरोध प्रकट किया और कहा कि तुम्हारे यहां बहुजन हित-सुख की ही कामना है, हमारे यहां तो सर्वजन हित-सुख की मंगल कामना की जाती है।

मैंने पुनः विनम्रतापूर्वक कहा कि जहां तक सब के प्रति मंगल कामना प्रकट करनी है, यह तो भगवान की वाणी में सर्वत्र भरी पड़ी है। विपश्यना के शिविरों में **'भवतु सब्ब मङ्गलं!'** की आवाज बार-बार गूंजती रहती है। मंगल कामना तो सब के प्रति ही प्रकट की जाती है, परंतु जहां लोगों को सक्रिय धर्म सिखाने के लिए भेजा गया वहां तो यही कहना उचित था कि अधिक-से-अधिक लोगों का हित-सुख साधो। उन्हें विपश्यना विद्या सिखाओ। यह कहना कितना असंगत और अव्यावहारिक होता कि साठ धर्माचार्य सब को विपश्यना विद्या सिखा कर उनके हित-सुख में सहायक बनते।

मैं देख रहा था कि मेरे उत्तर का उन पर कोई असर नहीं पड़ रहा था। वे यही कहते रहे कि अपनी ओर से भगवान को तो सब के हित-सुख साधने का ही आदेश देना चाहिए था।

सदियों के दुष्प्रचार से विकृत हुई मनोवृत्ति को दूर कर, सच्चाई कैसे समझायी जा सकती थी?

---

इसी उपदेश के कारण भगवान को लांछित करते हुए एक अन्य विद्वान आलोचक से पाला पड़ा। उसने यह कह कर भगवान की भर्त्सना की कि दूसरों को अकेले धर्मप्रचार करने का आदेश देते थे, जबकि स्वयं सैंकड़ों भिक्षुओं के साथ यात्रा करते थे। दोनों अवस्थाओं में कितना अंतर था, यह उसके दुराग्रही मानस को कौन समझाये? समझाये तो भी वह कहां समझे? कहां स्वीकारे?

धर्म-प्रसारण की प्रारंभिक अवस्था में जहां थोड़े-से भिक्षुओं द्वारा बहुत लोगों को मुक्तिदायिनी विपश्यना विद्या सिखलायी जानी थी, वहां प्रत्येक भिक्षु द्वारा अलग-अलग क्षेत्र के अधिक-से-अधिक लोगों के संपर्क में आकर उनका कल्याण करना अभीष्ट था। एक-एक भिक्षु अलग-अलग पथ पर अकेला चारिका करता हुआ, अधिक संख्या में लोगों को धर्म से लाभान्वित कर सके, यही अपेक्षित था।

जब साधकों की संख्या बढ़ने लगी और राजगीर तथा श्रावस्ती जैसे महानगरों में बहुसंख्यक लोगों में धर्म फैलने लगा तब वर्षावास के दिनों उन-उन स्थानों पर विहार करने के लिए भगवान अपने साथ बड़ी संख्या में भिक्षुओं को ले जाने लगे ताकि, इन बड़े नगरों की बड़ी आबादी वाले नये साधकों को धर्म का लाभ देने और पुराने साधकों को धर्म में पुष्ट करने के लिए अधिक संख्या में भिक्षुओं का उपयोग हो सके। भिन्न परिस्थिति के कारण, प्रारंभ में एक-एक भिक्षु की, और धर्म-प्रचार बढ़ जाने पर एक-साथ अधिक भिक्षुओं की धर्मचारिका स्वाभाविक थी। परंतु जिसका मकसद दुष्प्रचार करना ही हो, वह ऐसी सीधी-सी बात भी कैसे स्वीकार करे!

---

## मगध में पुनरागमन

बोधिसत्त्व की अवस्था में भगवान ने मगधनरेश बिंबिसार को वचन दिया था कि जब सम्यक संबोधि प्राप्त होगी तब राजगीर अवश्य आयेंगे। अतः अब वे १,००३ शिष्यों के साथ राजगीर आये। सूचना मिलते ही राजा बिंबिसार बहुसंख्यक नागरिकों के साथ उनकी अगवानी के लिए पहुँचा।

मगध की राज-नगरी में उरुवेल काश्यप के अनेक श्रद्धालु भक्त थे। उनके मन में यह शंका उत्पन्न हुई कि क्या श्रमण गौतम उरुवेल काश्यप का शिष्य होकर आया है अथवा उरुवेल काश्यप मुंडित होकर श्रमण गौतम का शिष्य बन गया है?

इस पर भगवान द्वारा पूछे जाने पर उरुवेल काश्यप ने भगवान को नमन करते हुए कहा कि मैं ही इनका शिष्य हूं। पहले मैं गृहस्थ जीवन के कामभोग को त्याग कर संन्यासी बना, परंतु मन से काम-वासना नहीं निकली। मैंने इस हेतु कामेष्टि यज्ञ किये, जिससे कि मरणोपरांत स्वर्ग में जन्म हो और मेरी कामभोग की प्रबल इच्छा पूर्ण हो। परंतु जब भगवान के संपर्क में आया तब इनकी शिक्षा से कामराग ही नहीं, सभी राग-द्वेष, मोह और अहंकार की अविद्या दूर हुई। अतः भगवान बुद्ध ही मेरे परम कृपालु शास्ता हैं और मैं इनका महाकृतज्ञ शिष्य हूं। इन्हीं की कृपा से शील, समाधि, प्रज्ञा में स्थित होकर मैं सही माने में स्थितप्रज्ञ हुआ, अरहंत हुआ। अब कामेष्टि यज्ञ कहां? काम-संबंधी सभी कामनाएं विलीन हो गयीं। **विहाय कामान्यः सर्वान्**[१] – कामभोग के प्रति कोई स्पृहा नहीं रही। **निःस्पृहः** हो गया। **निर्ममो निरहङ्कारः** हो गया। अब न अपने आप के प्रति अहंकार रहा और न अपने भक्तों के प्रति ममकार। 'मैं'-'मेरे' से उत्पन्न सभी अशांति दूर हो गयी। **शान्तिमधिगच्छति** की अवस्था प्राप्त हो गयी। तभी वस्तुतः स्थितप्रज्ञ और अरहंत होने की सच्चाई का अनुभव कर सका।

प्रजा-सहित राजा बिंबिसार भी समझ गया कि उसके राज्य में प्रसिद्ध और पूज्य उरुवेल काश्यप वस्तुतः भगवान की शिक्षा से ही अरहंत हुआ है।

राजा ने भिक्षुसंघ-सहित भगवान को भोजन के लिए आमंत्रित किया। भोजनोपरांत भगवान ने राजा और राजपरिवार-सहित उपस्थित दरबारियों को धर्म का उपदेश दिया। राजा बिंबिसार चाहता था कि संघ-सहित भगवान राजगीर में चिरकाल तक विहार करें। अतः उसने अत्यंत विनम्रतापूर्वक वेणुवन का मनोरम

---

१ **विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः। निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति॥** – *(भगवद्गीता २.७१)*

राज-उद्यान भगवान को विहार के लिए अर्पित कर दिया। वेणुवन बुद्धप्रमुख भिक्षुसंघ का पहला विहार हुआ।

भगवान ने वहीं दूसरा वर्षावास बिताया।

---

**रागं विनयेथ मानुसेसु, दिब्बेसु कामेसु चापि भिक्खु।**
**अतिक्कम्म भवं समेच्च धम्मं, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥**

*(सुत्तनिपात ३६३, सम्मापरिब्बाजनीयसुत्त)*

जो भिक्षु मनुष्य-लोक के काम-भोगों के प्रति तथा स्वर्ग-लोक में काम-भोगों के प्रति राग त्याग देता है और धर्म को अच्छी प्रकार जान कर, भवसंसरण से मुक्त हो जाता है, वही संसार में सही प्रकार प्रव्रजित आचरण कर सकेगा।

---

## आवश्यक सूचना

इंटरनेट द्वारा बैंकिंग सुविधा में अभूतपूर्व सुधार के कारण यह सूचित करते हर्ष हो रहा है कि सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट (विपश्यना इंटरनेशनल एकेडमी) तथा विपश्यना रिसर्च इंस्टीट्यूट को दान देने के लिए अब हमारे निम्नांकित खातों में "स्टेट बैंक ऑफ इंडिया" की भारत की किसी भी शाखा द्वारा पैसे जमा करवा सकते हैं।

पैसे जमा करने के साथ कृपया विवरण सहित इसकी सूचना धम्मगिरि के अकाउंट विभाग को पत्र, फोन, फैक्स अथवा ई-मेल से अवश्य भेजें ताकि वे आप का पैसा बैंक में जमा होने की जांच करके, उसकी रसीद आपको भिजवा सकें। पैसे भरने के बारे में अधिक जानकारी स्थानीय बैंक से मालूम कर सकते हैं।

**कोर बैंकिंग सिस्टम –**

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के हमारे इगतपुरी के खाते के नं. हैं –

सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट – खाता क्र.- ११५४२१६०३४२

विपश्यना रिसर्च इंस्टीट्यूट – खाता क्र.- ११५४२१६५६४६

इगतपुरी शाखा का कोड नं. – ०३८६ है।

विदेश के साधक **"स्विफ्ट"** ट्रांसफर के द्वारा अपने पैसे जमा करा सकते हैं। विवरण इस प्रकार हैं –

SWIFT Transfer details of respective Trusts are as follow:

1. Sayagyi U Ba Khin Memorial trust
(Vipassana International Academy):

SBININ BB 528 Branch Code 01247 beneficiary Sayagyi U Ba Khin Memorial Trust A\c No. 11542160342 AT Igatpuri branch code: 0386.

2. **Vipassana Research Institute (VRI)**

SBININ BB 528 branch code 01247 beneficiary Vipassana Research Institute A\c No. 11542165646 at Igatpuri branch code: 0386.

**संपर्क :**

**सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट,** धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३, जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत. फोन: ०२५५३-२४४०७६, २४४०८६ फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Email: info@giri.dhamma.org

---

## "धम्म अनाकुल" विपश्यना केंद्र, शेगांव

अकोला जिले में निर्माणाधीन विपश्यना केंद्र 'धम्म अनाकुल' के धम्मकक्ष का निर्माण चल रहा है। **'विपश्यना चैरिटेबल ट्रस्ट',** शेगांव को ८०-जी, आयकर की सुविधा प्राप्त है। साधक अपने दान भेजने के लिए 'कोर बैंकिग सुविधा' का लाभ उठा सकते हैं। पैसे जमा करने के साथ कृपया विवरण सहित इसकी सूचना पत्र, फोन, फैक्स अथवा ई-मेल से अवश्य भेजें ताकि पैसा बैंक में जमा होने की जांच करके, आपको उसकी रसीद भिजवा सकें।

**कोर बैंकिंग सिस्टम –** स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शेगांव

विपश्यना चैरिटेबल ट्रस्ट, शेगांव. खाता क्र.- ३०२०२३०८९८५

**संपर्क पता :** विपश्यना चैरिटेबल ट्रस्ट, शेगांव, अपना बाजार, मेन रोड, शेगांव, जि. बुलडाणा-४४४२०३, महाराष्ट्र. फोन: ९४२२१-८१९७०, ९८८१२-०४१२५. Email: dhamma_anakula@ssgmce.ac.in

---

## धम्मपत्तन, गोराईगांव (मुंबई) के विशेष कार्यक्रम

आगामी **गुरुपूर्णिमा** १८ जुलाई, शुक्रवार के दिन आ रही है। परंतु अधिकाधिक साधकों के लाभार्थ इसे दो दिन बाद **२० जुलाई, रविवार** को धम्मपत्तन पर **एक दिवसीय शिविर** के रूप में मनाने का निर्णय किया गया है। इसमें पूज्य गुरुदेव के उपस्थित रहने की पूरी संभावना है।

कृपया अपने **आवेदन-पत्र** यथाशीघ्र भेजें। धम्मपत्तन के कार्यालय में प्रातः ११ से सायं ५ बजे तक फोन **०२२-** २८४५-१२०६, २८४५-१२०४ पर अपनी बुकिंग करा सकते हैं। कृपया **बिना बुकिंग** आने का प्रयत्न न करें।

धम्मपत्तन पर १९ जुलाई को आरंभ होने वाला **सतिपट्ठान-शिविर** इसी कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए २०-७ से २८-७ तक होगा ताकि शिविरार्थी **गुरुपूर्णिमा** का लाभ लेने के पश्चात शिविर में सम्मिलित हों।

धम्मपत्तन पर **धम्मसेवकों** की आवश्यकता रहती ही है। जो भाई-बहन धम्मसेवा देना चाहें वे कृपया अपने आवेदन-पत्र यथाशीघ्र भेजें।

धम्मपत्तन के सभी शिविर **एक्जीक्यूटिव्स** के लिए ही होंगे। अतः योग्य व्यक्ति ही आवेदन करें।

---

## विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि पर पालि प्रशिक्षण
## 'वर्ष २००८-२००९ के लिए विज्ञप्ति'

### एक महीने का सघन 'पालि-हिंदी' प्रारंभिक पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००५ में प्रारंभ हुआ था। इस वर्ष इसका चौथा सत्र है। यह सत्र **२३ नवंबर २००८** (सुबह) से **२० दिसंबर २००८** (सुबह) तक बिना किसी अवकाश के चलेगा।

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ सितंबर २००८** है।

**प्रवेश योग्यताएं –**

**ए) योग्यताएं –** वे साधक जिन्होंने (१) पांच दस दिवसीय विपश्यना शिविर, तथा (२) एक सतिपट्ठान शिविर, किये हों (३) पंचशील का पालन करते हुए, (४) दो वर्ष से प्रतिदिन दो घंटे की नियमित साधना करते हों एवं (५) विद्या के प्रति समर्पित हों। बीस दिवसीय शिविर किये हुए साधक को वरीयता दी जायगी।

इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

**बी) शैक्षणिक योग्यता –** १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

### एक महीने का सघन 'पालि-हिंदी' उच्च पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००६ में पहली बार प्रारंभ किया गया था। इस वर्ष इसका तृतीय सत्र है। इस वर्ष यह पाठ्यक्रम **२१ दिसंबर २००८ (सुबह) से १७ जनवरी २००९ (सुबह)** तक बिना अवकाश के चलेगा

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ सितंबर २००८** है।

**प्रवेश योग्यताएं –**

**ए) योग्यताएं-** ➲ इस पाठ्यक्रम के लिए उपरोक्त योग्यताओं के साथ व्ही. आर. आई. द्वारा आयोजित एक महीने का सघन पालि-हिंदी **प्रारंभिक पाठ्यक्रम** पूरा किया होना अनिवार्य है। उन विपश्यी साधकों को जिन्हें पालि का प्रारंभिक ज्ञान है तथा जिनके पास बाकी योग्यताएं हैं, उनके आवेदन पत्र पर भी विचार किया जायगा। ➲ इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु भी क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

**बी) शैक्षणिक योग्यता-** ➲ १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

इन दोनों पाठ्यक्रमों के लिए लगभग चौबीस (१२ पुरुष एवं १२ महिला) विद्यार्थियों का पंजीकरण किया जायगा।

इनके लिए आवेदन-पत्र कृपया **विपश्यना विशोधन विन्यास,** धम्मगिरि, इगतपुरी से प्राप्त कर सकते हैं।

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

**नये उत्तरदायित्व**

**आचार्य**

Ms. Evie Chauncey
*To serve Dhamma Modana (Canada)*

**वरिष्ठ स. आचार्य**

Mr. Pemasiri Amarasinghe
*To serve Dhamma Sobh± (Sri Lanka)*

**नव नियुक्तियां**

**सहायक आचार्य**

१. श्री कौशलकुमार भारद्वाज, दिल्ली
२. श्री अनिलकुमार, नई दिल्ली
३. श्रीमती प्रेरणा परब, मुंबई
४. श्री राजेंद्र प्रसाद, चंडीगढ़
५. श्री प्रेमचंद सुनगेर, आदमपुर *(पंजाब)*
६. डॉ. खेमराज वानकर, नागपुर
७. सुश्री तिमिला शिल्पकार, नेपाल
8. Ms. Nuntiya Abhabhirama, *Thailand*
9. Mr. Vitcha Klinpratoom, *Thailand*
10. & 11. Mr. Paiboon & Mrs. Nate Tantrasuwan, *Thailand*

**बालशिविर शिक्षक**

१. श्री प्रभाकर नंदेश्वर, इंदौर
२. डॉ. रवि दिवेकर, रतलाम
३-४. श्री दिलीप एवं श्रीमती लता सोनोने, बीड
५. श्रीमती सारिका राउत, परभणी
६. श्री आनंद रूगटे, परभणी
७. श्री मान रघुवीरसिंह, नांदेड
८. श्रीमती अनुराधा सुनील कुलकर्णी, नांदेड
९. श्रीमती रेखा राठौर, नांदेड
१०-११. डॉ. महेंद्र एवं श्रीमती सुजाता गायकवाड, औरंगाबाद
१२. श्री रवि नगवे, औरंगाबाद
१३. श्री नागोराव डोंगरे, औरंगाबाद
१४. श्री अनिल अमृत चरबे, नागपुर
१५. श्रीमती रेखा शंकर गोखे, नागपुर
१६. श्री धरमपाल बबूषा माने, यवतमाल
१७. श्री प्रज्ञानंद तुकाराम इलमकर, नागपुर
१८. श्रीमती गीतांजली राहुल बोरसे, नागपुर
१९. श्रीमती जुई तुषार बोरसे, नागपुर
२०. श्रीमती मंदाकिनी गुलाबराव कंदारे, वर्धा
२१. श्रीमती प्रज्ञा सुनील हिरेखान, अमरावती
२२. श्रीमती करुणा भालेकर, बालाघाट
२३. श्री सुरेंद्र शेंडे, बालाघाट
२४. डॉ. मदन सिंह गौतम, सहारनपुर (उ.प्र.)
२५. श्रीमती प्रतिभा जैन, कोलकाता
२६. सुश्री संजुक्ता चकमा, त्रिपुरा
२७. श्री संजीब चकमा, त्रिपुरा
२८. श्री शिशिर चकमा, त्रिपुरा
२९. श्री सुकुमार चकमा, त्रिपुरा
३०-३१. श्री ओम एवं श्रीमती मेहर मलहोत्रा, अमेरिका
32. Mr. Steve Jarand Calagary, *USA*
33. & 34. Mr. William Ng & Mrs. Esther Low Sung Hu, *Singapore*
35. Ms. San Sanda Aung, *Singapore*
36. Mrs. Shirley Yap, *Malaysia*
37. Ms. Wong, Ah Chan, *Malaysia*
38. Mrs. Astha Jain, *USA*
39. Mrs. Lorene (Renee) Cerchie, *USA*


## दोहे धर्म के

**चल साधक चलते रहें, देश और परदेश।**
**धरम चारिका से कटें, सब के मन के क्लेश॥**
**उठो! जगो! आलस तजो! मंगल हुआ प्रभात।**
**मिटा अँधेरा पाप का, बीती काली रात॥**
**विमल धरम का ज्योतिधर, मंगल जगा प्रभात।**
**दुखहर, भयहर, तिमिरहर, अरुण तरुण नवजात॥**
**एक बार फिर से खुले, जन हित अमृत द्वार।**
**हर्ष और उल्लास का, उमड़ा उदधि अपार॥**
**पाप शाप संताप के, बुझ जाएं अंगार।**
**जग मरुधर पर बह चली, पुण्य धर्म की धार॥**
**धर्म पुनः जाग्रत हुआ, खुले मुक्ति के द्वार।**
**सुनो कानवालों सुनो, सत्य धर्म का सार॥**

**केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड**
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

## दूहा धरम रा

**चल साधक चलता रवां, देस और परदेस।**
**धरम चारिका स्यूं कटै, जन जन मन रा क्लेस॥**
**धरम धरा स्यूं फिर हुवै, जग मँह धरम प्रसार।**
**जन मन रा दुखड़ा कटै, पावै सुख रो सार॥**
**दसूं दिसा मँह धरम रो, गूंजै मंगळ घोस।**
**त्रिस्णा-तड़पत जीव नै, मिलै सुखद संतोस॥**
**लोक लोक मँह धरम रो, फैले सुभ आलोक।**
**लोक लोक मंगळ जगै, होवै सभी असोक॥**
**ब्यापै बिस्व विपस्सना, होवै जन कल्याण।**
**जन जन चालै धरम पथ, पावै पद निरवाण॥**
**फिर स्यूं गूंजै जगत मँह, सुद्ध धरम रो नाद।**
**होवै दूर उदासियां, होवै दूर बिसाद॥**

**देबेनरा मूंदड़ा परिवार**
गोश्वारा रोड, पंडित मेघराज मार्ग,
विराट नगर, नेपाल.
फोनः ०९९-२१-५२७६७१
की मंगल कामनाओं सहित


'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2552, **ज्येष्ठ पूर्णिमा,** १८ **जून,** 2008

**वार्षिक शुल्क** रु. 30/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. 500/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं.** 19156/71. Regn. No. LII/REN/RNP-46/2006-08

Licenced to post without Prepayment of postage -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at Igatpuri-422403, Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

**विपश्यना विशोधन विन्यास**
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org